ISSN: 2319 – 8753

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

Vol. 1, Issue 1, November 2012

| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal || Impact Factor: 1.672|

जातक कथाओं में शिक्षा व्यवस्था

DR. NAGENDRA KUMAR

Associate Professor, Dept. Of History, Government College, Kotra, Udaipur, Rajasthan, India

सार

जातक या जातक पालि या जातक कथाएं बौद्ध ग्रंथ त्रिपिटक का सुत्तपिटक अंतर्गत खुद्दकनिकाय का १०वां भाग है। इन कथाओं में भगवान बुद्ध की कथाये हैं। जो मान्यता है कि खुद गौतमबुद्ध जी के द्वारा कहे गए है, हालांकि की कुछ विद्वानों का मानना है कि कुछ जातक कथाएँ, गौतमबुद्ध के निर्वाण के बाद उनके शिष्यों द्वारा कही गयी है। विश्व की प्राचीनतम लिखित कहानियाँ जातक कथाएँ हैं जिसमें लगभग 600 कहानियाँ संग्रह की गयी है। यह ईसवी संवत से 300 वर्ष पूर्व की घटना है। इन कथाओं में मनोरंजन के माध्यम से नीति और धर्म को समझाने का प्रयास किया गया है।जातक खुद्दक निकाय mushak seth ki kathaदसवाँ प्रसिद्ध ग्रन्थ है। जातक को वस्तुतः ग्रन्थ न कहकर ग्रन्थ समूह ही कहना अधिक उपयुक्त होगा। उसका कोई-कोई कथानक पूरे ग्रन्थ के रूप में है और कहीं-कहीं उसकी कहानियों का रूप संक्षिप्त महाकाव्य-सा है। जातक शब्द जन धातु से बना है। इसका अर्थ है भूत अथवा भाव। 'जन्' धातु में 'क्त' प्रत्यय जोड़कर यह शब्द निर्मित होता है। धातु को भूत अर्थ में प्रयुक्त करते हुए जब अर्थ किया जाता है तो जातभूत कथा एवं रूप बनता है। भाव अर्थ में प्रयुक्त करने पर जात-जनि-जनन-जन्म अर्थ बनता है। इस तरह 'जातक' शब्द का अ र्थ है, 'जात' अर्थात् जन्म-सम्बन्धीं। 'जातक' भगवान बुद्ध के पूर्व जन्म सम्बन्धी कथाएँ है। बुद्धत्व प्राप्त कर लेने की अवस्था से पूर्व भगवान् बुद्ध बोधिसत्व कहलाते हैं। वे उस समय बुद्धत्व के लिए उम्मीदवार होते हैं और दान, शील, मैत्री, सत्य आदि दस पारमिताओं अथवा परिपूर्णताओं का अभ्यास करते हैं। भूत-दया के लिए वे अपने प्राणों का अनेक बार बलिदान करते हैं। इस प्रकार वे बुद्धत्व की योग्यता का सम्पादन करते हैं। बोधिसत्व शब्द का अर्थ ही है बोधि के लिए उद्योगशील प्राणी। बोधि के लिए है सत्व (सार) जिसका ऐसा अर्थ भी कुछ विद्वानों ने किया है। पालि सुत्तों में हम अनेक बार पढ़ते हैं, ''सम्बोधि प्राप्त होने से पहले, बुद्ध न होने के समय, जब मैं बोधिसत्व ही था'' आदि। अतः बोधिसत्व से स्पष्ट तात्पर्य ज्ञान, सत्य दया आदि का अभ्यास करने वाले उस साधक से है जिसका आगे चलकर बुद्ध होना निश्चित है। भगवान बुद्ध भी न केवल अपने अन्तिम जन्म में बुद्धत्व-प्राप्ति की अवस्था से पूर्व बोधिसत्व रहे थे, बल्कि अपने अनेक पूर्व जन्मों में भी बोधिसत्व की चर्या का उन्होंने पालन किया था। जातक की कथाएँ भगवान् बुद्ध के इन विभिन्न पूर्वजन्मों से जबकि वे बोधिसत्व रहे थे , सम्बन्धित हैं। अधिकतर कहानियों में वे प्रधान पात्र के रूप में चित्रित है। कहानी के वे स्वयं नायक है। कहीं-कहीं उनका स्थान एक साधारण पात्र के रूप में गौण है और कहीं-कहीं वे एक दर्शक के रूप में भी चित्रित किये गये हैं। प्रायः प्रत्येक कहानी का आरम्भ इस प्रकार होता है-''एक समय राजा ब्रह्मदत्त के वाराणसी में राज्य करते समय (अतीते वाराणसिंय बह्मदत्ते रज्ज कारेन्ते) बोधिसत्व कुरंग मृग की योनि से उत्पन्न हुए अथवा ... सिन्धु पार के घोड़ों के कुल में उत्पन्न हुए अथवा ..... बोधिसत्व ब्रह्मदत्त के अमात्य थे अथवा ..बोधिसत्व गोह की योनि सें उत्पन्न हुए आदि, आदि।

परिचय

नए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढांचे (एनसीएफ) के मसौदा दस्तावेज में प्रस्तावित किया गया है कि कक्षा 11 और 12 के छात्रों को भारत के स्वतंत्रता संग्राम के ज्ञात और कम ज्ञात दोनों आंकड़ों के बारे में पढ़ाया जाएगा।

सिल्क रूट, भारत, ग्रीस और सीरिया की साहित्यिक कृतियों के साथ-साथ भारत और चीन में नए धर्मों और दर्शन का उदय कुछ अन्य पाठ हैं जिन्हें अगले शैक्षणिक वर्ष से इतिहास की किताबों में जोड़ने का प्रस्ताव है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के मसौदा दस्तावेज में भी तीन-भाषा फॉर्मूले की सिफारिश पर जोर दिया गया है, जिसमें कहा गया है कि छात्र अपने स्कूल के वर्षों में कम से कम तीन भाषाएं सीखेंगे। इसने गणित को कला, खेल और भाषा के साथ एकीकृत करके अधिक रचनात्मक तरीके से पढ़ाकर इसके प्रति भय को कम करने का भी सुझाव दिया।

दस्तावेज़ में यह भी सिफारिश की गई है कि सभी स्कूल स्तरों पर छात्रों को कला, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, गणित, भाषा के साथ-साथ शारीरिक शिक्षा में भारत के योगदान के बारे में पढ़ाया जाना चाहिए।

ISSN: 2319 – 8753
International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology
Vol. 1, Issue 1, November 2012
| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal || Impact Factor: 1.672|

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की तर्ज पर तैयार, जो "भारत में जड़ता और गौरव" पर जोर देती है, मसौदा दस्तावेज़ में सिफारिश की गई है कि मूलभूत छात्रों को "सेवा का मूल्य" सिखाया जाए।

इसमें कहा गया है कि बच्चों को पंचतंत्र, जातक, हितोपदेश की मूल कहानियों और भारतीय परंपरा की अन्य मजेदार दंतकथाओं और प्रेरक कहानियों को पढ़ने और सीखने की अनुमति दी जानी चाहिए।

टिप्पणियों के लिए जारी किए गए मसौदे में कहा गया है, "इतिहास के महान भारतीय नायकों के जीवन की कहानियों को बच्चों को प्रेरित करने और उनमें मूल मूल्यों को पेश करने का एक उत्कृष्ट तरीका माना जाता है।"

पूर्व इसरो प्रमुख के कस्तूरीरंगन के नेतृत्व में एक विशेषज्ञ पैनल द्वारा तैयार किए गए मसौदा दस्तावेज़ में प्रस्तावित किया गया है कि इतिहास में, छात्रों को "पुरातात्विक और ऐतिहासिक पद्धति की मूल बातें" सीखनी चाहिए और "प्रारंभिक साहित्यिक ग्रंथों के साथ-साथ भौतिक संस्कृति का उत्पादन करने के तरीके की व्याख्या कैसे करें" सीखना चाहिए। एक ऐतिहासिक कथा।"[1,2,3]

इसने यह भी सिफारिश की कि छात्रों को भारत में सामान्य कृषि पारिस्थितिकी और अर्थव्यवस्था के साथ-साथ हिंद महासागर व्यापार नेटवर्क के साथ-साथ सिल्क रोड जैसे ओवरलैंड व्यापार मार्गों से परिचित कराया जाना चाहिए ताकि यह देखा जा सके कि भारत बाकी हिस्सों से कैसे गहराई से जुड़ा हुआ है। इस समय में दुनिया के.

भारत में औपनिवेशिक शासन के उद्भव पर, इसने सुझाव दिया कि छात्रों को 16वीं शताब्दी से, जब पहली यूरोपीय संयुक्त स्टॉक ट्रेडिंग कंपनी भारत में आई थी, 1947 में राष्ट्र-राज्य के जन्म तक पढ़ाया जाना चाहिए।

इसमें कहा गया कि इसे इस जन्म के क्षण से लेकर रियासतों के एकीकरण और 1950 में संविधान को अपनाने तक बढ़ाया जाना चाहिए।

"यह पाठ्यक्रम छात्रों को भारत के विभिन्न हिस्सों पर नियंत्रण के लिए यूरोपीय औपनिवेशिक शक्तियों के बीच संघर्ष और किसान और आदिवासी प्रतिरोध आंदोलनों सहित भारतीय प्रतिरोध के विभिन्न रूपों से परिचित कराएगा। यह पाठ्यक्रम छात्रों को औपनिवेशिक काल के दौरान किए गए व्यापक प्रशासनिक, शैक्षिक और सामाजिक सुधारों से भी परिचित कराएगा। पाठ्यक्रम के अंतिम भाग में भारत के स्वतंत्रता संग्राम पर चर्चा की जाएगी और इसमें न केवल इसके प्रसिद्ध आंकड़े बल्कि संघर्ष के कुछ कम ज्ञात आंकड़े भी शामिल होंगे, "यह कहा।

यह सर्वविदित है कि सामाजिक विज्ञान को आमतौर पर एक विषय के रूप में पढ़ाया जाता है जिसमें मुख्य रूप से इतिहास की तारीखें, दुनिया भर में भौगोलिक विशेषताओं के नाम, मौलिक अधिकारों और कर्तव्यों की सूची और आर्थिक संस्थानों के नामकरण जैसे तथ्यों को रटाया जाता है।

"सामाजिक विज्ञान कक्षाओं में अवधारणाओं की समझ अक्सर गायब होती है। इसके परिणामस्वरूप, छात्रों की विषय में रुचि कम हो जाती है क्योंकि बहुत सारे तथ्यों को सीखने के पीछे के कारणों या उन तथ्यों में अंतर्निहित मूल अवधारणाओं के साथ पर्याप्त रूप से जुड़े बिना सीखने की उम्मीद की जाती है, "दस्तावेज़ में कहा गया है।

पूरे दस्तावेज़ में, विशेषज्ञ पैनल ने बच्चों को "मूल्य" सिखाने की आवश्यकता पर बल दिया है।

दस्तावेज़, जब अंतिम रूप दिया जाएगा, सीबीएसई स्कूलों में पढ़ाई जाने वाली एनसीईआरटी पुस्तकों के लिए मानक स्थापित करेगा। शिक्षा मंत्रालय पहले ही घोषणा कर चुका है कि नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 द्वारा संशोधित नई एनसीईआरटी पाठ्यपुस्तकें 2024-25 शैक्षणिक सत्र से स्कूलों में पेश की जाएंगी।

विचार-विमर्श

जातक कथा (Jaatak Tales) : बौद्ध ग्रंथ त्रिपिटक का सुत्तपिटक में कई जातक कथाएं संकलित हैं. जातक कथाओं में पशु, पशियों के माध्यम से ज्ञान की बातें कही गई हैं. पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, इन कथाओं का संबंध महात्मा बुद्ध से हैं और खुद भगवान बुद्ध ने यह कथा कही है. वहीं कुछ विद्वान ऐसे भी मानते हैं कि महात्मा बुद्ध के शिष्यों ने जातक कथाएं संकालित की हैं. जातक कथाओं में एक ज्ञानभरी शिक्षा छिपी होती है जो प्रेरणा स्त्रोत की तरह काम करती है. आज हम आपके लिए हिंदी कहानी के सभार से लाए हैं ऐसी ही एक जातक कथा सोने का हंस.

सोने का हंस

वाराणसी में कभी एक कर्त्तव्यनिष्ठ व शीलवान् गृहस्थ रहा करता था . तीन बेटियों और एक पत्नी के साथ उसका एक छोटा-

ISSN: 2319 – 8753

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

Vol. 1, Issue 1, November 2012

| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal || Impact Factor: 1.672|

सा घर संसार था .किन्तु अल्प-आयु में ही उसका निधन हो गया .मरणोपरान्त उस गृहस्थ का पुनर्जन्म एक स्वर्ण हंस के रुप में हुआ . पूर्व जन्म के उपादान और संस्कार उसमें इतने प्रबल थे कि वह अपने मनुष्य-योनि के घटना-क्रम और उनकी भाषा को विस्मृत नहीं कर पाया . पूर्व जन्म के परिवार का मोह और उनके प्रति उसका लगाव उसके वर्तमान को भी प्रभावित कर रहा था . एक दिन वह अपने मोह के आवेश में आकर वाराणसी को उड़ चला जहाँ उसकी पूर्व-जन्म की पत्नी और तीन बेटियां रहा करती थीं .[2,3,4]

घर के मुंडेर पर पहुंच कर जब उसने अपनी पत्नी और बेटियों को देखा तो उसका मन खिन्न हो उठा क्योंकि उसके मरणोपरान्त उसके परिवार की आर्थिक दशा दयनीय हो चुकी थी . उसकी पत्नी और बेटियां अब सुंदर वस्त्रों की जगह चिथड़ों में दिख रही थीं . वैभव के सारे सामान भी वहां से तिरोहित हो चुके थे . फिर भी पूरे उल्लास के साथ उसने अपनी पत्नी और बेटियों का आलिंगन कर उन्हें अपना परिचय दिया और वापिस लौटने से पूर्व उन्हें अपना एक सोने का पंख भी देता गया, जिसे बेचकर उसके परिवार वाले अपने दारिद्य को कम कर सकें .

इस घटना के पश्चात् हंस समय-समय पर उनसे मिलने वाराणसी आता रहा और हर बार उन्हें सोने का एक पंख दे कर जाता था.

बेटियां तो हंस की दानशीलता से संतुष्ट थी मगर उसकी पत्नी बड़ी ही लोभी प्रवृत्ति की थी. उसने सोचा क्यों न वह उस हंस के सारे पंख निकाल कर एक ही पल में धनी बन जाये. बेटियों को भी उसने अपने मन की बात कही. मगर उसकी बेटियों ने उसका कड़ा विरोध किया.

अगली बार जब वह हंस वहां आया तो संयोगवश उसकी बेटियां वहां नहीं थी. उसकी पत्नी ने तब उसे बड़े प्यार से पुचकारते हुए अपने करीब बुलाया. नल-प्रपंच के खेल से अनभिज्ञ वह हंस खुशी-खुशी अपनी पत्नी के पास दौड़ता चला गया. मगर यह क्या. उसकी पत्नी ने बड़ी बेदर्दी से उसकी गर्दन पकड़ उसके सारे पंख एक ही झटके में नोच डाले और खून से लथपथ उसके शरीर को लकड़ी के एक पुराने में फेंक दिया. फिर जब वह उन सोने के पंखों को समेटना चाह रही थी तो उसके हाथों सिर्फ साधारण पंख ही लग सके क्योंकि उस हंस के पंख उसकी इच्छा के प्रतिकूल नोचे जाने पर साधारण हंस के समान हो जाते थे.

बेटियाँ जब लौट कर घर आयीं तो उन्होंने अपने पूर्व-जन्म के पिता को खून से सना देखा; उसके सोने के पंख भी लुप्त थे. उन्होंने सारी बात समझ ली और तत्काल ही हंस की भरपूर सेवा-शुश्रुषा कर कुछ ही दिनों में उसे स्वस्थ कर दिया.

स्वभावत: उसके पंख फिर से आने लगे. मगर अब वे सोने के नहीं थे. जब हंस के पंख इतने निकल गये कि वह उडने के लिए समर्थ हो गया. तब वह उस घर से उड़ गया. और कभी भी वाराणसी में दुबारा दिखाई नहीं पड़ा.

बुद्धकालीन भारत के समाज, धर्म, राजनीति, भूगोल, लौकिक विश्वास, आर्थिक एवं व्यापारिक अवस्था एवं सर्वाधिक जीवन की पूरी सामग्री हमें जातक में मिलती है। जातक केवल लोक-कथाओं का प्राचीनतम संग्रह भर नहीं हैं। बौद्ध साहित्य में तो उसका स्थान सर्वमान्य है ही। स्थविरवाद के समान महायान में भी उसकी प्रभूत महत्ता है, यद्यपि उसके रूप के सम्बन्ध में कुछ थोड़ा बहुत परिवर्तन है। बौद्ध साहित्य के समान समग्र भारतीय-साहित्य में और इतना ही नहीं, समग्र विश्व-साहित्य में जातक का एक महत्वपूर्ण स्थान है। इसी प्रकार भारतीय सभ्यता के एक युग का ही वह निदर्शक नहीं है, बल्कि उसके प्रसार की एक अद्‌भूत गाथा भी जातक में समाये हुए हैं। विशेषतः भारतीय इतिहास में जातक के स्थान को कोई दूसरा ग्रन्थ नहीं ले सकता। बुद्धकालीन भारत के सामाजिक आर्थिक, राजनैतिक जीवन को जानने के लिए जातक एक उत्तम साधन हैं। चूँकि उसकी सूचना प्रासंगिक रूप से ही दी गई है इसलिए वह और भी अधिक प्रामाणिक हैं और महत्वपूर्ण भी। जातक के आधार पर यहाँ बुद्धकालीन भारत का संक्षिप्ततम विवरण भी नहीं दिया जा सकता। जातक की निदान-कथा में हम तत्कालीन भारतीय भूगोल सम्बन्धी महत्वपूर्ण सूचना पाते हैं। जातक में कहा गया है कि जम्बुदीप (भारत) का विस्तार दस हजार योजन है। मध्य प्रदेश की सीमाओं का उल्लेख वहाँ इस प्रकार किया गया है,‘‘मध्य देश की पूर्व दिशा में कजंगला नामक कस्बा है, उसके बाद बड़े शाल के वन है औ र फिर आगे सीमान्त देश। पूर्व-दक्षिण में सललवती नामक नदी है उसके आगे सीमान्त देश। दक्षिण-दिशा में सेतकण्णिक नामक कस्बा है, उसके आगे सीमान्त देश। पश्चिम दिशा में थूण नामक ब्राह्मण ग्राम है, उसके बाद सीमान्त देश। उत्तर दिशा में उशीरध्वज नामक पर्वत है, उसके बाद सीमान्त देश।‘‘

यह वर्णन यहाँ विनय-पिटक से लिया गया है और बुद्ध कालीन मध्य देश की सीमाओं का प्रामाणिक परिचायक माना जाता है। जातक के इसी भाग में नेरंजना अनोमा आदि नदियों, पाण्डव पर्वत, वैभार गिरि गयासीस आदि पर्वतों उरूवेला,

कपिलवस्तु, वाराणसी, रा जगृह, लुम्बिनी, वैशाली, श्रावस्ती आदि नगरों और स्थानों एवं उत्कल देश (उड़ीसा) का तथा यष्टिवन (लटिठवन) आदि वनों का उल्लेख मिलता है। सम्पूर्ण कोसल और मगध का तो उसके ग्रामों, नगरों, नदियों, और पर्वतों के सहित वह पूरा वर्णन उपस्थित करता है। सोलह महाजनपदों- अंग, मगध, काशी, कोसल, वज्जि, मल्ल, चेदि, वत्स, कुरू, पांचाल, मच्छ (मत्स्य),सूरसेन (शूरसेन), अस्सक (अश्मक), अवन्ती, गन्धार और कम्बोज का विस्तृत वर्णन हमें असम्पादन जातक में मिलता है।[1]

महासुतसोम जातक (537) में कुरू देश का विस्तार 300 योजन बताया गया है। इसी प्रकार धूमकारि जातक (413) तथा दस ब्राह्मण जातक (415) में कहा गया है कि युधिष्ठिर गोत्र के राजा का उस समय वहाँ राज्य था। कुरु देश की राजधानी इन्द्रप्रस्थ का विस्तार सात योजन महासुतसोम जातक (537) तथा विधुर पण्डित जातक (545) में दिया गया है। धनंजय कोरव्य और सुतसोम आदि कुरू-राजाओं के नाम कुरूधम्म जातक (276), धूमकारि जातक (413), सम्भव जातक (515) और विधुर पंडित जातक (545) में आते है। उत्तर पंचाल के लिए कुरू और पंचाल वंशों में झगड़ा चलता रहा, इसकी सूचना हम चम्पेय्य जातक (506) तथा अन्य अनेक जातकों मेंं पाते हैं। कभी वह कुरू राष्ट्र में सम्मिलित हो जाता था (सोमनस्स जातक 415) और कभी कम्पिल्ल राष्ट्र में भी, जिसका साक्ष्य ब्रह्मदत्त जातक (323), चयद्दिस जातक (513) और गण्डतिन्दु जातक (520) में विद्यमान है। पंचाल राज दुर्मख निमि का समकालिक था, इसकी सूचना हमें कुम्भकार जातक में मिलती है। अस्सक (अश्मक) राष्ट्र की राजधानी पोतन या पोतलि का उल्लेख हमें चुल्लकालिंग जातक (301)में मिलता है। मिथिला का विस्तार सुरूचि जातक (489) और गन्धार जातक (406) में सात योजन बताया गया है। महाजनक जातक (539) में मिथिला का बड़ा सुन्दर वर्णन उपलब्ध होता है जिसकी तुलना महाभारत 3.206.6-9 से की जाती है। सागल नगर का वर्णन कालिंगबोधि जातक (479) और कुस जातक (531) में है। काशी राज्य के विस्तार का वण र्न धजविदेह जातक (391) में है। उसकी राजधानी वाराणसी के केतुमती, सुरून्धन, सुदस्सन, ब्रह्मवड्ढन, पुप्फवती, रम्मनगर और मोलिनी आदि नाम थे। ऐसा साक्ष्य अनेक जातकों में मिलता है। तण्डुलनालि जातक (5) में वाराणसी के प्राकार का वर्णन है। तेलपत्त जातक (96) और सुसीम जातक (163) में वाराणसी से तक्षशिला की दूरी 2000 योजन बताई गई है। कुम्भकार जातक (408) में गन्धार के राजा नग्गजि या नग्नजित् का वर्णन है। कुस जातक (531) में मल्लराष्ट्र और उसकी राजधानी कुसावती या कुसिनारा का वर्णन है। चम्पेय्य जातक (506) में अंग और मगध के संघर्ष का वर्णन है। इसी प्रकार रूक्खधम्म जातक और फन्दन जातक में शाक्य और कोलियों के रोहिणी नदी के पानी को लेकर झगड़े का वर्णन है। वत्स राज्य और उसके अधीन भग्ग् राज्य की सूचना धोनसाख जातक (353) में मिलती है। इन्द्रिय जातक में सुरट्ठ अवन्ती, दक्षिणापथ, दंडकवन कुम्भवति नगर आदि का वर्णन है। संरभग जातक में सुरट्ठ देश का वर्णन है।

सालित्तक जातक और कुरूधम्म जातक से हमें पता चलता है कि अचिरवती नदी श्रावस्ती में होकर बहती थी। सरभंग जातक में गोदावरी नदी का भी उल्लेख है और उसे कविट्ठ वन के समीप बताया ग या है। गन्धार जातक में कश्मीर गन्धार का उल्लेख है। कण्ह जातक में संकस्स (संकाश्य) का उल्लेख है। चम्पेय्य जातक से हमें सूचना मिलती है कि चम्पा नदी अंग और मगध जनपदों की सीमा पर होकर बहती थी। गंगमाल जातक में गन्धमादन पर्वत का उल्लेख है। बिम्बिसार सम्बन्धी महत् वपूर्ण सूचना जातकों में भरी पड़ी है। महाकोसल की राजकुमारी कोसलादेवी के साथ उसके विवाह का वर्णन और काशी गाँव की प्राप्ति का उल्लेख हरितमात जातक (239) और बड्ढकि सूकर जातक(283) में है। मगध और कोसल के संघर्षों का और अन्त में उनकी एकता का उल्लेख बड्ढकिसूकर जातक, कुम्मासपिंड जातक, तच्छसूकर जातक और भद्दसाल जातक आदि अनेक जातकों में है। इस प्रकार बुद्धकालीन राजाओं राज्यों, प्रदेशों, जातियों, ग्रामों, नगरों, नदियों, पर्वतों आदि का पूरा विवरण हमें जातकों में मिलता है। तिलमुट्ठि जातक (252) में ह में तक्षशिला विश्वविद्यालय का एक उत्तम चित्र मिलता है। संखपाल जातक (524) और दरीमुख जातक (378) में मगध के राजकुमारों के तक्षशिला में शिक्षार्थ जाने का उल्लेख है। तक्षशिला में शिक्षा के विधान, पाठ्यक्रम, अध्ययन विषय, उनके व्यावहारिक और सैद्धान्तिक पक्ष, निवास भोजन, नियन्त्रण आदि के विषय में पूरी जानकारी हमें जातकों में मिलती है। वाराणसी राजगृह, मिथिला, उज्जयिनी श्रावस्ती, कौशाम्बी तक्षशिला आदि प्रसिद्ध नगरों को मिलाने वाले मार्गों का तथा स्थानीय व्यापार का पूरा विवरण हमें जातकों में मिलता है। काशी से चेदि जाने वाली सड़क का उल्लेख वेदब्भ जातक (48)में है। क्या-क्या पेशे उस समय लोगों में प्रचलित थे, कला और दस्तकारी की क्या अवस्था थी तथा व्यवसाय किस प्रकार होता था, इसके अनेक चित्र हमें जातकों में मिलते हैं। बावेरू जातक (339) और सुसन्धि जातक (360) से हमें पता लगता है कि भारतीय व्यापार विदेशों से भी होता था और भारतीय व्यापारी सुवर्णभूमि (बरमा से मलाया तक का प्रदेश) तक व्यापार के लिए जाते थे। भरूकच्छ उस समय एक प्रसिद्ध बन्दरगाह था। सुसन्धि जातक में हमें इसका उल्लेख मिलता है।

जल के मार्गों का भी जातकों में स्पष्ट उल्लेख है। लौकिक विश्वासों आदि के बारे में देवधम्म जातक (6) और नलपान जातक (20) आदि में समाज में स्त्रियों के स्थान के सम्बन्ध में अण्डभूत जातक (62) आदि में दासों आदि की अवस्था के सम्बन्ध में

ISSN: 2319 – 8753

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

Vol. 1, Issue 1, November 2012

| *A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal* || *Impact Factor: 1.672*|

कटाहक जातक (125) आदि में, सुरापान आि द के सम्बन्ध में सुरापान जातक (81) आदि में, यज्ञ में जीव हिंसा के सम्बन्ध में दुम्मेध जातक (50) आदि में, व्यापारिक संघों और डाकुओं के भय आदि के सम्बन्ध में खुरप्प जातक (265) और तत्कालीन शिल्पकला आदि के विषय में महाउम्मग्ग जातक (546) आदि में प्रभूत सामग्री भरी पड़ी है, जिसका यहाँ विवरण देना अत्यन्त कठिन है। जिस समय का जातक में चित्रण है, उसमें वर्ण व्यवस्था प्रचलित थी। ब्राह्मणों का समाज में उच्च स्थान था। ब्राह्मण और क्षत्रिय ये दो वर्ण उच्च माने जाते थे। दासों की प्रथा प्रचलित थी, उनके साथ दुर्व्यवहार के भी उदाहरण मिलते हैं, दास क्रीत भी होते थे, और पितृक्रमागत भी होते थे। विशेष अवस्थाओं में दास मुक्त भी कर दिये जाते थे। बुद्ध काल में जाति पेशे की सूचक नहीं थी। जातक कहानियों से पता चलता है कि किसी भी समय एक पेशे को छोड़कर कोई व्यक्ति दूसरा पेशा कर सकता था और इसमें उसकी जाति बाधक नहीं होती थी। विवाह-सम्बन्ध प्रायः समान जातियों और कुलों (सामाजिक कुल) में अच्छे माने जाते थे। उत्सवों में पुरुषों के साथ स्त्रियाँ भी सम्मिलित होती थीं अनेक प्रकार के उत्सव बुद्ध काल में होते रहते थे और उ नमें मांस मछली के भोजन के साथ-साथ सुरापान भी चलता था। स्त्रियों के सदाचार को अक्सर जातक की कहानियों में संशय की दृष्टि से देखा गया है। कहा गया है कि सत्य का होना उनमें सुदुर्लभ ही है। ''सच्च तेसं सुदुल्लभं'' परन्तु भार्या के रूप में स्त्री की प्रशंसा की गइ र् है और उसे परम सखा बताया गया है, ''भरिया नाम परमा सखा''।

शिल्पों का समाज में आदर था। वेश्याओं के प्रभूत वर्णन जातक में मिलते है, इस समय यह प्रथा विद्यमान थी। इसी प्रकार द्यूत का व्यसन भी प्रचलित था। विधुर पंडित जातक में हम धनंजय कोरव्य को जुआ खेलते देखते है। शासन में रिश्वत चलती थी। कणवेर जातक में हम एक कोतवाल को रिश्वत लेते देखते हैं। शकुनों में और फलित ज्योतिष में लोगों का विश्वास था। छींक आने को अपशकुन मानते थे और जब कोई छींकता था तो उससे लोग कहते थे 'जियो' या 'चिंरजीव होओ'। सत्य क्रिया (सच्च किरिया) में लोगों का विश्वास था। मूगपक्ख जातक में हम देखते है कि काशिराज की रानी ने सत्य क्रिया के बल से सन्तान प्राप्त की। इसी प्रकार बट्टक जातक में कहा है कि एक बटेर के बच्चे ने अपने सत्य क्रिया बल से वृक्ष में लगी आग को बुझा दि या। वयः प्राप्त कुमारिकाओं को अपना वर खोजने की स्वतन्त्रता थी, ऐसा अम्ब जातक से पता चलता है। संकिच्च जातक में पत्नी को धनक्कीता कहा गया है। इससे पता चलता है कि कुछ विशेष अवस्थाओं में पति को कन्या के पिता को धन भी देना पड़ता था। उदय जातक से भी ऐसा ही मालूम पड़ता है।

जहाँ तक धार्मिक अवस्था का सम्बन्ध है, एक प्रकार का लोक-धर्म प्रचलित था। लोग यक्षों, वृक्षों, नागों, गरुड़ों और नदियों की पूजा करते थे। एक स्त्री को जो अपने पति से विछुड़ गई है, हम भागीरथी गंगा की स्तुति करते और उसकी शरण में जाते देखते हैं। परन्तु इससे यह निष्कर्ष निकालना ठीक नहीं कि एक प्रकार का भाग वत् धर्म लोगों में प्रचलित था। गोकुलदास दे ने इस बात को दिखाने का बड़ा प्रयास किया है, कि धर्म का जो स्वरूप जातककालीन समाज में हम देखते हैं उसमें भागवत धर्म के तत्व विद्यमान हैं। जातककालीन समाज में एक प्रकार का लोकधर्म प्रचलित था। जिसमें साधारण जन-समाज के विश्वास और उसकी विभिन्न लौकिक और आध्यात्मिक आवश्यकताएँ समतल पर प्रतिबिम्बित थी। अर्थात पूजा, वन्दना, दान, देवताओं की शरणागति आदि की भावनाएँ प्रधान थी। जातक वस्तुतः प्राचीन भारतीय सामाजिक जीवन सम्बन्धी सूचनाओं का अगाध भण्डार ही हैं और उनका समग्रतया अध्ययन पालि साहित्य के इतिहास लेखक के लिए सम्भव नहीं है। यह अनेक महाग्रन्थों का विषय है।

बौद्ध धर्म के सभी सम्प्रदायों में जातक का महत्व सुप्रतिष्ठित है। महायान और हीनयान को वह एक प्रकार से जोड़ने वाली कड़ी है, क्योंकि महायान का बोधिसत्व आदर्श यहाँ अपने बीज-रूप में विद्यमान है। दूसरी-तीसरी शताब्दी ईसवी पूर्व के साँची और भरहुत के स्तूपों में जातक के अनेक दृश्य अंकित है। मिलिन्दपंहां में अनेक जातक कथाओं को उद्धृत किया गया है। अमरावती स्तूप द्वितीय शताब्दी ईसवी में उसके चित्र अंकित है। पाँचवी शताब्दी में लंका में उसके 500 दृश्य अंकित किये जा चुके थे। अजन्ता की चित्रकारी में भी महिस जातक (278) अंकित है। बोध गया में भी उसके अनेक चित्र अंकित है। जावा के बोरोबदूर स्तूप 9वीं शताब्दी ईसवी में बरमा के पगान नगर में स्थित पेगोडाओं (13 वीं शताब्दी ईसवी) में और सिआम में सुखोदय नामक प्राचीन नगर में जातक के अनेक दृश्य चित्रित मिले हैं। अतः जातक का महत्व भारत में ही नहीं, भारत के बाहर भी स्थविरवाद बौद्ध धर्म में ही नहीं बौद्ध धर्म के अन्य अनेक रूपों में भी प्रतिष्ठित है।

कालक्रम की दृष्टि से वैदिक साहित्य की शुनःशेप की कथा यम-यमी संवाद, पुरूरवा उर्वशी संवाद आदि कथानक ही बुद्ध पूर्व काल के हो सकते है। छान्दोग्य और बृहदारण्यक आदि कुछ उपनिष्दों की आख्यायिकाएँ भी बुद्ध पूर्व काल की मानी जा सकती है, और इसी प्रकार ऐतरेय और शतपथ ब्राह्मण के कुछ आख्यान भी बुद्ध पूर्व काल की माने जा सकते हैं। इनका भी जातकों से और सामान्यतः पालि सहित्य से घनिष्ठ सम्बन्ध है। तेविज्ज सुत्त में अट्टक, वामक, वामदेव, विश्वामित्र, यमदग्नि, अिं घैंरा, भारद्वाज, वशिष्ठ, काश्यप और भृगु इन दस मन्त्रकर्ता ऋषियों के नामों के साथ-साथ ऐतरेय ब्राह्मण, तैत्तिरीय ब्राह्मण, छान्दोग्य ब्राह्मण और छन्दावा ब्राह्मण का भी उल्लेख हुआ है। मज्झिम निकाय के अस्सलायन सुत्तन्त के आश्वालायन ब्राह्मण

ISSN: 2319 – 8753

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

Vol. 1, Issue 1, November 2012

| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal || Impact Factor: 1.672|

को प्रश्न उपनिषद के आश्वलायन से मिलाया गया है। मज्झिम निकाय के आश्वालायन श्रावस्ती निवासी है और वेद-वेदा घैं में पार घैं त है। इसी प्रकार प्रश्न उपनिषद के आश्वालयन भी वेद वेदा घैं के महापंडित है और कौसल्य (कोसल निवासी) है। जातकों में भी वैदिक साहित्य के साथ निकट सम्पर्क के अनेक लक्षण पाये जाते है। उद्दालक जातक (487)में उद्दालक के तक्षशिला जाने और वहाँ एक लोक विश्रुत आचार्य की सूचना पाने का उल्लेख है। इसी प्रकार सेतुकेतु जातक में उद्दालक के पुत्र श्वेतुकेतु का कलाओं की शिक्षा प्राप्त करने के लिए तक्षशिला जाने का उल्लेख है। शतपथ ब्राह्मण के उद्दालक को हम उत्तरापथ में भ्रमण करते हुए देखते है। अतः इससे यह निष्कर्ष निकालना असंगत नहीं है कि जातकों के उद्दालक और श्वेतुकेतु ब्राह्मण ग्रन्थों और उपनिषदों के इन नामों के व्यक्तियों से भिन्न नहीं है। जर्मन विद्वान लूडर्स ने सेतुकेतु जातक(377) में आने वाली गाथाओं को वैदिक आख्यान और महाकाव्य युगीन काव्य को मिलाने वाली कड़ी कहा है, जो समुचित ही है। इसी प्रकार सिंहली विद्वान मललसेकर का कहना है कि जातक का सम्बन्ध भारतीय साहित्य की उस आख्यान-विधा से है, जिससे उत्तरकालीन महाकाव्यों का विकास हुआ है। रामायण और महाभारत के साथ जातक की तुलना करते समय हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि इन दोनों ग्रन्थों के सभी अंश बुद्ध पूर्व युग के नहीं है। रामायण के वर्तमान रूप में 2400 श्लोक पाये जाते हैं। रामायण में कहा भी गया है 'चतुर्विंश सहस्राणि श्लोकानाम उक्त वान् ऋषिः। किन्तु बौद्ध महाविभाषा-शास्त्र (कात्यायनी पुत्र के ज्ञान प्रस्थान शास्त्र की व्याख्या) से सिद्ध है कि द्वितीय शताब्दी ईसवी में भी रामायण में केवल 12,000 श्लोक थे। रामायण 2-109-34 में बुद्ध तथागत का उल्लेख मिलता है। इसी प्रकार शक, यवन आदि के साथ संघर्ष का वर्णन है। किष्किन्धा काण्ड में सुग्रीव के द्वारा कुरू मद्र और हिमालय के बीच में यवनों औ र शकों के देश और नगरों को स्थित बताया गया है।

इससे सिद्ध है कि जिस समय में अंश लिखे गये थे, ग्रीक और सिथियन लोग पंजाब के कुछ प्रदेशों पर अपना आधिपत्य जमा चुके थे। अतः रामायण के काफी अंश महाराज बिम्बिसार या बुद्ध के काल के बाद लिखे गये। महा भारत में इसी प्रकार एडूकों (बौद्ध मन्दिरों) का स्पष्ट उल्लेख है। बौद्ध विशेषण चातुर्महाराजिक भी वहाँ आया है। रोमक (रोमन) लोगों का भी वर्णन है। इसी प्रकार सिथियन और ग्रीक आदि लोगों का भी वर्णन है। आदि पर्व में महाराज अशोक को महासुर कहा गया है और महावीर्योऽपराजितः के रूप में उसकी प्रशंसा की गई है। शान्ति पर्व में विष्णुगुप्त कौटिल्य (द्वितीय शताब्दी ईसवीं पूर्व) के शिष्य कामन्दक का भी अर्थविद्या के आचार्य के रूप में उल्लेख है। इस प्रकार अनेक प्रमाणों के आधार पर सिद्ध है कि महाभारत के वर्तमान रूप का काफी अंश बुद्ध अशोक और कौटिल्य विष्णुगुप्त के बाद के युग का है। जातक की अनेक गाथाओं और रामायण के श्लोकों में अद्भुत समानता है। दसरथ जातक (461) और देवधम्म जातक (6) में हमें प्रायः राम-कथा की पूरी रूपरेखा मिलती है। जयद्दिस जातक (513) में राम का दण्डकारण्य जाना दिखाया गया है। इसी प्रकार साम जातक(540) की सदृशता रामायण 2. 63-25 से है और विण्टरनित्ज के मत में जातक का वर्णन अधिक सरल और प्रारम्भिक है। वेस्सन्तर जातक के प्रकृति वर्णन का साम्य इसी प्रकार वाल्मीकि के प्रकृति वर्णन से है और इस जातक की कथा के साथ राम की कथा में भी काफी सदृशता है। महाभारत के साथ जातक की तुलना अनेक विद्वानों ने की है। उनके निष्कर्षों को यहाँ संक्षिप्ततम रूप में भी रखना वास्तव में बड़ा कठिन है। महाजनक जातक (539) के जनक उपनिषदों और महाभारत के ही ब्राह्मज्ञानी जनक है। मिथिला के प्रासादों को जलते देखकर जनक ने कहा था मिथिलायां प्रदीप्तायां न में दह्यति किंचन। ठीक उनका यही कथन हमें महाजनक जातक (539) में भी मिलता है तथा कुम्भकार जातक (408) और सोणक जातक(529) में भी मिलता है। अतः दोनों व्यक्ति एक है।

इसी प्रकार ऋष्यश्रृघैं की पूरी कथा नकिनिका जातक(526) में है। युधिष्ठिर (युधिट्ठिल) और विदुर (विधूर) का संवाद दस ब्राह्मण जातक (495) में है। कुणाल जातक (536) में कृष्ण और द्रौपदी की कथा है। इसी प्रकार घट जातक(355) में कृष्ण द्वारा कंस-वध और द्वारका बसाने का पूरा वर्णन है। महाकण्ह जातक(469) निमि जातक(541) और महानारदकस्सप जातक(544) में राजा उशीनर और उसके पुत्र शिवि का वर्णन है। सिवि जातक (449) में भी राजा शिवि की दान पारमिता का वर्णन है, अपनी आँखों को दे देने के रूप में। अतः कहानी मूलतः बौद्ध है, इसमें सन्देह नहीं है। महाभारत में 100 ब्राह्मदत्तों का उल्लेख है। सम्भवतः ब्रह्मदत्त किसी एक राजा का नाम न होकर राजाओं का सामान्य विशेषण था, जिसे 100 राजाओं ने धारण किया। दुम्मेध जातक(50) में भी राजा और उसके कुमार दोनों का नाम ब्रह्मदत्त बताया गया है। इसी प्रकार गंगमाल जातक(421) में कहा गया है कि ब्रह्मदत्त कुल का नाम है। सुसीम जातक(411), कुम्मासपिण्ड जातक(415), अट्ठान जातक(425), लोमासकस्सप जातक(433) आदि जातकों की भी, यही स्थिति है। अतः जातकों में आये हुए ब्रह्मदत्त केवल एक समय के पर्याय नहीं है। उनमें कुछ न कुछ ऐतिहासिकता भी अवश्य है।

रामायण और महाभारत के अतिरिक्त पतंजलि के महाभाष्य में भी जातक गाथाएँ उल्लिखित हैं। प्राचीन जन साहित्य में और बाद के कथा-साहित्य पर भी उसका प्रभाव उपलक्षित है। प्रथम शताब्दी ईसवी में गुणाढ्य ने पैशाची प्राकृत में अपनी वड्डुकहा (बृहत्कथा) लिखी जो अ ाज अप्राप्त है। परन्तु सोमदेव ने जो स्वयं बौद्ध थे, ग्यारहवीं -बारहवीं शताब्दी में अपना

ISSN: 2319 – 8753

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

Vol. 1, Issue 1, November 2012

| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal || Impact Factor: 1.672|

कथासरित्सागर बृहत्कथा के आधार पर ही लिखा और उसमें अनेक कहानियों के मूल श्रोत भी जातक में दिखाई पड़ते है। इसी प्रकार हितोपदेश में भी अनेक कहानियाँ जातक कथाओं प र आधारित दिखाई जा सकती हैं। भारतीय लोक-साहित्य में भी अनेक जातक-कहानियों को अदृश्य रूप से खोजा जा सकता है। ऐसी कहानियाँ भारत के प्रत्येक प्रान्त में प्रचलित हैं। उदाहरणतः-''सीख वाकूँ दीजिए, जाकूँ सीख सुहाइ। सीख न दीजै बानरा, बया कौ घर जाई'' के रूप में बन्दर और बया की कहानी भारत के सब प्रदेशों में विदित है। बन्दर और बया की यह कहानी कूटिदूसक जातक (321) की कहानी है। इसी प्रकार कई अनेक कहानियों को मनोरंजकपूर्ण ढंग से खोजा जा सकता है।

जिस प्रकार जातक कथाएँ समुद्र मार्ग से लंका, बर्मा, सिआम, जावा, सुमात्रा हिन्द-चीन आदि दक्षिण पूर्वी एशिया के देशों को गई और वहाँ स्थापत्य कला आदि में चित्रित की गई उसी प्रकार स्थल मार्ग से हिन्दुकुश और हिमालय को पार कर पश्चिमी देशों तक उनके पहुँचने की कथा बड़ी लम्बी और मनोहर है। पिछले पचास-साठ वर्षों की ऐतिहासिक गवेषणाओं से यह पर्याप्त रूप से सिद्ध हो चुका है कि बुद्ध पूर्व काल में भी विदेशों के साथ भारत के व्यापारिक सम्पर्क थे। बावेरू जातक और सुसन्धि जातक में विदेशों के साथ भारत के व्यापारिक सम्पर्क के सम्बन्धों की पर्याप्त झलक दिखायी देती है। द्वितीय शताब्दी ईसवीं से ही अलसन्द जिसे अलक्षेन्द्र (अलेक्जेण्डर) ने बसाया था, पूर्व और पश्चिम की संस्कृतियों का मिलन केन्द्र हो गया था। वस्तुतः पश्चिम में भारतीय साहित्य और विशेषतः जातक कहानियों की पहुँच अरब और उनके बाद ग्रीक लोगों के माध्यम से हुई। पंचतन्त्र में अनेक जातक-कहानियाँ विद्यमान है, यह तथ्य सर्वविदित है। छठीं शताब्दी ईसवीं में पंचतन्त्र का अनुवाद पहलवी भाषा में किया गया। आठवीं शताब्दी में कलेला दमना शीर्षक से उसका अनुवाद अरबी में किया गया। ' कलेला दमना' शब्द 'कर्कट' और 'दमनक' के अरबी रूपान्तर हैं। पन्द्रहवीं शताब्दी में पंचतंत्र के अरबी अनुवाद का जर्मन भाषा में अनुवाद ,फिर धीरे-धीरे सभी यूरोपीय भाषाओं में उसका रूपान्तर हो गया। वास्तव में सीधे रूप से भी जातक ने विदेशी साहित्य को प्रभावित किया है और उसकी कथा भी अत्यन्त प्राचीन है।

ग्रीक साहित्य में ईसप की कहानियाँ प्रसिद्ध है। फ्रेंच, जर्मन और अंग्रेज विद्वानों की खोज से सिद्ध है कि ईसप एक ग्रीक थे। ईसप की कहानियों का यूरोपीय साहित्य पर बड़ा प्रभाव पड़ा है और विद्वानों के द्वारा यह दिखा दिया गया है कि ईसप की अधिकांश कहानियों का आधार जातक है।

सीहचम्म जातक (189) की कथा अति प्रसिद्ध है जो ईसप की कहानियों में भी पाई जाती है। सिंह की खाल ओढ़े हुए गधा इन दोनों जगह ही दिखाई पड़ता है। डॉ0 टी0 डब्ल्यू0 रायस डेविड्स का मत है कि शेक्सपियर ने अपने नाटक किंग जोन्ह में इस कथा की ओर संकेत किया है- अंक-2, दृश्य-1 तथा अंक 3 दृश्य 1 में। इसी प्रकार अलिफ लैला की कहानियों से भी जातक की समानताएँ है। समुग्ग जातक (436) का सीधा सम्बन्ध अलिफ लैला की एक कहानी से दिखाया गया है। कृतज्ञ पशु और अकृतज्ञ मनुष्यों की कहानियाँ जो सच्चं किर जातक (73) तक्कारिय जातक (481) आ ैर महाकवि जातक (516) में मिलती है। यूरोप की अनेक भाषाओं के कथा-साहित्य में बिखरी पड़ी है। इसी प्रकार अकृतज्ञ पत्नी की कहानी भी है, जो चूलपदुम जातक (193) में ं आई है, प्रायः सारे यूरोप के कथा साहित्य में व्याप्त है। कच्छप जातक (215) की कहानी ग्रीक, लैटिन, अरबी, फारसी और अनेक यूरोपीय भाषाओं के साहित्य में पाई जाती है ऐसा रायस डेविड्स का कथन है। इसी प्रकार जम्बुखादक जातक (294) की कहानी है। पनीर के टुकड़े को लेकर गीदड़ और कौए की कहानी के रूप में यह यूरोप भर के बालकों को विदित है। महोसध जातक, दधिवाहन जातक और राजोवाद जातक की कहानियाँ भी इसी प्रकार यूरोपीय साहित्य में थोड़े बहुत रूपान्तर से पाई जाती है। अन्य अनेक कहानियों की भी तुलना विद्वानों ने जातक से की हैं। आठवीं शताब्दी में अरबों ने यूरोप पर आक्रमण किया। स्पेन और इटली आदि को उन्होंने रौंद डाला। उन्हीं के साथ जातक कहानियाँ भी इन देशों में गईं और उन्होंने धीरे-धीरे सारे यूरोपीय साहित्य को प्रभावित किया। फ्रांस के मध्यकालीन साहित्य में पशु पक्षी सम्बन्धी कहानियों की अधिकता है। फ्रेंच विद्वानों ने उन पर जातक के प्रभाव को स्वीकार किया है।बायबिल और विशेषतः सन्त जोन्ह के सुसमाचार की अनेक कहानियों और उपमाओं की तुलना पालि, त्रिपिटक और विशेषतः जातक के इस सम्बन्धी विवरणों से विद्वानों ने की है। ईसाई धर्म पर बौद्ध धर्म का पर्याप्त प्रभाव पड़ा है। इस प्रभाव में अन्य अनेक तत्वों के अति रिक्त जातक का भी काफी सहयोग रहा है। इ्साई सन्त प्लेसीडस की तुलना निग्रोधमिग जातक (12) की कथा से की गई है। यद्यपि विण्टरनित्ज ने उसमें अधिक साम्य नहीं पाया है। पर सब से अधिक साम्य मध्ययुग की रचना बरलाम एण्ड जोसफत का जातक के बोधिसत्व से है। इस रचना में जो मू लतः छठीं या सातवीं शताब्दी ईसवी में पहलवी में लिखी गई थी। भगवान बुद्ध की जीवनी एक ईसाई सन्त के परिधान में वर्णित की गई है। बाद में इस रचना के अनुवाद अरब, सीरिया इटली और यूरोप की अन्य भाषाओं में ं हुए। ग्रीक भाषा में इस रचना का अनुवाद आठवीं शताब्दी में अरब के खलीफा अलमंसूर के समकालिक एक ईसाई सन्त ने, जिसका नाम दमिश्क का सन्त जोन्ह (सेण्ट जोन्ह आव दमस्कस 676-749 ई0) था किया। ग्रीक से इस रचना का लैटिन में अनुवाद हुआ और फिर यूरोप की अन्य भाषाओं में अनुवाद हुआ। करीब 80 संस्करण इस रचना के यूरोप अफ्रीका और पश्चिमी एशिया की भाषाओं में हुए है। इस रचना में जोसफत बोधिसत्व के रूप में है और

ISSN: 2319 – 8753

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

Vol. 1, Issue 1, November 2012

| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal || Impact Factor: 1.672|

बरलाम उनके गुरु हैं। बुद्ध के जन्म की कथा बृद्ध, रोगी, मृत और प्रव्रजित को उनके द्वारा देखना और संन्यास लेना, ये सब तथ्य बुद्धचरित की शैली में यहाँ वर्णित है। बुद्ध के जन्म पर की गई भविष्यवाणी का भी वर्णन और पिता के द्वारा पुत्र को महल के अन्दर रखने का भी, ताकि यह संसार का दुःख न देख सके। जोसफत शब्द अरबी युदस्तफ का रूपान्तर है, जो स्वयं संस्कृत बोधिसत्व का अरबी अनुवाद है। बोधिसत्व शब्द पहले बोसत बना और फिर जोसफत या जोसफ। ईसाई धर्म में सन्त जोसफत को (जिनका न केवल नाम बल्कि पूरा जीवन बोधिसत्व बुद्ध का जीवन है) ईसाई सन्त के रूप में स्वीकार किया गया है। पोप सिक्सटस पंचम (1585-90) ने अपने 27 दिसम्बर सन् 1585 के आदेश में जोसफत और बरलाम को ईसाई सन्तों के रूप में स्वीकार किया है।

इस प्रकार ईसाई परिधान में मध्यकालीन यूरोप बोधिसत्व बुद्ध को पूजता रहा। मध्ययुगीन ईसाई यूरोप पर बौद्ध धर्म के प्रभाव का यह प्रतीक है। यह एक बड़ी अद्‌भुत किन्तु ऐतिहासिक रूप से सत्य बात है। डॉ0 टी0 डब्ल्यू0 रायस डेविड्स ने शेक्सपियर के मर्चेण्ट ऑव वेनिस में तीन डिबियों तथा आधसेर मांस के वर्णन में तथा एज यू लाइक इट में बहुमूल्य रत्नों के विवरण में जातक के प्रभाव को ढूँढ निकाला है एवं स्लेवोनिक जाति के साहित्य में तथा प्रायः सभी पूर्वी यूरोप के साहित्य में जातक के प्रभाव की विद्यमानता दिखाई है। भिक्षु शीलभद्र ने पर्याप्त उदाहरण देकर सिद्ध किया है कि निमि जातक (541) ही चौदहवीं शताब्दी के इटालियन कवि दाँते की प्रसिद्ध रचना का आधार है। जर्मन विद्वान बेनफे ने जातक को विश्व को कथा साहित्य का उद्गम कहा है जो तथ्यों के प्रकाश में अतिशयोक्ति नहीं कहा जा सकता है।

इस प्रकार भारतीय साहित्य और संस्कृति के साथ विश्व के साहित्य और सभ्यता के इतिहास में जातक का स्थान महत्वपूर्ण है।

परिणाम

बच्चे के विकास में उद्दीपन का विशेष महत्त्व है। यहां उद्दीपन से तात्पर्य है- प्रेरणा। बच्चा उचित अवसरों को पाकर कुछ क्रिया-प्रतिक्रिया करता है। इस क्रिया-प्रतिक्रिया से वह सीखता है और सीखने से उसके विकास को एक गति मिलती है। जीवन में बच्चे का पहला संपर्क अपने माता-पिता के साथ होता है। बच्चे का अधिकतर समय परिवार के साथ व्यतीत होता है। यह तो माता-पिता का फर्ज़ है कि वे बच्चे का पालन पोषण करें, किंतु पालन-पोषण केवल पौष्टिक भोजन और साफ़-सुथरे कपड़ों तक ही सीमित नहीं रहना चाहिए।अभिभावकों को चाहिए कि अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत से प्राप्त बाल विकास संबंधित खेल, क्रियाकलाप, कहानियां और गीतों का प्रयोग बच्चे के साथ करें। बच्चा प्रतिदिन परिवार के सदस्यों के साथ अनेक प्रकार की पारस्परिक क्रियाएं करके अप्रत्यक्ष रूप से शिक्षा प्राप्त करता है।अकसर माता-पिता यह भूल जाते हैं कि बच्चों के व्यक्तित्व के विकास में उनकी एक और भी महत्त्वपूर्ण भूमिका है।[3,4,5]

गृह-शिक्षक के रूप में अभिभावक

गृह-शिक्षक के रूप में अभिभावक कुछ युवा माता-पिता प्रारंभिक बाल्यावस्था की गतिविधियों की महत्ता को नहीं मानते, तो कुछ माता-पिता उन्हें यांत्रिक रूप से प्रयोग में लाते हैं, तो कछ को इनका ज्ञान ही नहीं होता और वे बच्चों को घर पर अनावश्यक औपचारिक शिक्षा के बोझ तले दबा देते हैं।वर्षों से सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तनों के कारण भारतीय माताएं अपने पुरातन संस्कारों को छोड़ती जा रही हैं। इसकी वजह संयुक्त परिवारों का विघटन तथा नौकरी की तलाश में मूल स्थान छोड़ना आदि है। परिणामस्वरूप बच्चों के पालन-पोषण के परंपरागत तरीके तेजी से बदलते जा रहे हैं। अब पुराने खेल, गीत, कहानियां, घरेलू खिलौने जो बच्चों के माता-पिता तथा घर के बड़े-बूढ़े, दादा-दादी आदि उपयोग में लाते थे, उनका उपयोग लगभग समाप्त होता जा रहा है। . संयुक्त परिवार से एक और लाभ भी था - परिवार में सगे संबंधियों के बच्चे भी होते थे। सब मिलकर खाते-पीते, खेलते और एक-दूसरे से सीखते भी थे।

आज के छोटे (लघु) परिवार में इन सबकी कोई संभावना नहीं। माता-पिता अगर बच्चे को उसके हाल पर छोड़ दें तो बच्चा अपने वातावरण में जो कुछ देखेगा, सही या गलत, उसे अपना लेगा, क्योंकि उसमें अभी इन दोनों में अंतर करने की क्षमता का अभाव होता है। परंतु माता-पिता जब घर में एक प्रेमपूर्ण सीखने का वातावरण बनाते हैं, तो बच्चों के भीतर सुरक्षा और जिज्ञासा की भावना पैदा होती है। अतः शिक्षिका तथा माता-पिता को मिलकर यह प्रयास करना चाहिए कि बच्चा सीख सके और आगे बढ़ सके। माता-पिता की सहभागिता से अभिप्राय है कि पूर्व प्राथमिक शिक्षा के नियोजन और क्रियान्वयन में वे आगे बढ़कर शिक्षिका की सहायता करें और बच्चे के अभिभावक की भूमिका को अधिक सफलतापूर्वक और प्रभावी ढंग से निभाएं। आजकल नर्सरी में दाखिले के लिए भी छोटे बच्चों की प्रवेश परीक्षा ली जाती है। नर्सरी में प्रवेश के बाद 'थ्री आर्स' सीखने पर विशेष बल दिया जाता है।

ISSN: 2319 – 8753

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

Vol. 1, Issue 1, November 2012

| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal || Impact Factor: 1.672|

इस तरह के तरीके प्रयोग करने से बच्चे तो बोझ तले दबे ही रहते हैं, माता-पिता भी दबाव में रहते हैं। बच्चे के जीवन को उपयुक्त सांचे में ढालने के लिए शिक्षक एवं माता-पिता की अहम् भूमिका है। माता-पिता को चाहिए कि वे बच्चे पर अनावश्यक दबाव न डालें, बल्कि उनके साथ खेलें। खेल-खेल में ही बच्चे बहुत कुछ सीखते जाते हैं। साथ ही माता-पिता को चाहिए कि वे शिशु उद्दीपन की पर्याप्त जानकारी प्राप्त करके बच्चों का उद्दीपन सार्थक एवं प्रभावशाली बनाएं।

प्रोत्साहित करने के लिए आवश्यक बातें

बच्चे को प्रोत्साहित व प्रेरित करने के लिए माता-पिता को घर पर निम्नलिखित बातों पर अवश्य ध्यान देना चाहिए।

- बच्चे के साथ गुणात्मक समय (quality time) बिताएं।
- बच्चे के साथ बातें करें। बच्चे को अधिक से अधिक बोलने काअवसर दें।
- बच्चे को प्यार और सुरक्षा की भावना दें।
- बच्चे को गीत, कविता और कहानियां सुनाएं और सुनें।
- बच्चे के साथ उसका साथी बनकर खेलें।
- उन्हें उचित मार्गदर्शन दें।
- बच्चे को अधिक रोकें-टोकें नहीं।
- बच्चे की बात धैर्य से सुनें।
- बच्चे को खिलौने और उसके स्तर की चित्र-पुस्तकें दें।
- बच्चे को घर के बाहर घुमाने ले जाएं और आस-पास की चीज़ों के बारे में बातचीत करें। बच्चों के चारों तरफ के वातावरण में जो परिवर्तन हो रहा है, उनकी तरफ उसका ध्यान दिलाएं।
- बच्चे की तुलना दूसरे बच्चों के साथ न करें। हर बच्चे की क्षमता भिन्न होती है।
- क्रियाकलाप व खेल बच्चे की आयु, स्तर और क्षमता के अनुसार दें।
- क्रियाकलाप/खेल/खिलौने ऐसे हों, जो बच्चे के विकास की दृष्टि से उपयोगी हों।
- आपका व्यवहार ऐसा हो कि बच्चा उसका अनुकरण करे। .
- बच्चे के प्रश्नों के उत्तर दें और उसमें खोजबीन की आदत डालें।
- बार-बार प्रश्न पूछने पर उसे डांटिए नहीं।
- घर का वातावरण तनाव से मुक्त रखें, ताकि बच्चा सुरक्षित महसूस करे।
- बच्चों को अपने-आप अनुभव करने का मौका दें, क्योंकि वे स्वयं चीजों को छूकर, सूंघकर, चखकर, ध्यानपूर्वक देखकर, सीखना चाहते हैं।[4,5,6]

लाभ

क्रियाकलापों व खेलों से बच्चे को माता-पिता व घर के अन्य वयस्कों के साथ रहने एवं आदान-प्रदान के अधिक अवसर मिलते हैं।बड़े लोगों के साथ अर्थपूर्ण समय (quality time) बिताने से बच्चे को निम्नलिखित लाभ होते हैं [4,5]

- बच्चे. में सुरक्षा की भावना उत्पन्न होती है।
- बच्चे को अपने अस्तित्व का बोध होता है।
- सबके साथ सामंजस्य स्थापित करना सीखता है।
- दूसरों के प्रति विश्वास की भावना जाग्रत होती है।
- उसमें आत्मविश्वास की भावना सबल होती है। आ
- त्माभिव्यक्ति के अवसर मिलते हैं।
- बच्चे में उत्सुकता और उत्साह की वृद्धि होती है।
- सोचने-समझने, कल्पना आदि के अवसर मिलते हैं।
- और अधिक जानने तथा सीखने की जिज्ञासा बढ़ जाती है।
- अपने वातावरण के प्रति आकर्षण बढ़ता है।
- अन्य लोगों के प्रति संवेदनशील हो जाता है।
- माता-पिता व अन्य वयरकों द्वारा पौराणिक कथाएं (जैसे – रामायण,महाभारत एवं जातक कथाएं) और पंचतंत्र की कथाएं (पशु-पक्षियों की कहानियां) आदि सुनकर नैतिक मूल्यों एवं अच्छे विचारों का निर्माण होता है। माता-पिता

को चाहिए कि इन कथाओं से रोचकप्रसंग लेकर सरल भाषा में सुनाएं। समय का अभाव होने पर भी मातापिता का यह कर्तव्य है कि वे समय निकालकर बच्चों को कहानी अवश्य सुनाएं, क्योंकि कहानी सुनने से बच्चों को आनंद मिलता है, उनकी कल्पनाशक्ति का विकास होता है,

- उनका ज्ञान बढ़ता है और वे नए-नए शब्द भी सीखते हैं। इसके अतिरिक्त उनकी पुस्तकों के प्रति रुचि भी विकसित होती है। जब माता-पिता या कोई भी परिवार का सदस्य बच्चों के साथ मिलकर गाता और खेलता है, तो बच्चे उन्हें अपने नज़दीक पाकर बहुत खुश होते हैं। वे अपने को सुरक्षित महसूस करते हैं। लेकिन आजकल जीवन की गति इतनी तेज़ हो गई है कि माता-पिता को बच्चों के साथ गाने व खेलने का समय कम ही मिल पाता है। जीवन की व्यस्तता के कारण हम इन प्रचलित परंपरागत गीतों को भूलते जा रहे हैं। माता-पिता को इन्हें फिर से बच्चों के जीवन में लाने का प्रयास करना चाहिए। कहने का तात्पर्य यह है कि व्यस्त होने के बावजुद समय निकालकर अपने प्रांत में प्रचलित परंपरागत गीतों, खेलों को बच्चों के साथ अवश्य खेलें, क्योंकि अच्छे संस्कारों की नींव माता-पिता दवारा ही पड़ती है।
- उचित खेल-क्रियाओं द्वारा माता-पिता और बच्चे एक-दूसरे को ठीकसे समझ सकते हैं।
- अगर माता-पिता बच्चे को आसपास के वातावरण को समझने में । सहायता दें, तो बच्चे का सामान्य ज्ञान बढ़ेगा और शुरू से ही बच्चे के प्रश्नों का तर्कपूर्ण या सही उत्तर दें, तो उसका दृष्टिकोण वैज्ञानिक बनेगा।
- समुचित उद्दीपन क्रियाओं के माध्यम से शिशुओं में जिज्ञासा प्रवृत्ति जागृत की जा सकती है।

शिक्षिका की भूमिका

पूर्व प्राथमिक शिक्षा में शिक्षिका की भूमिका पूर्व प्राथमिक शिक्षा में केंद्र-बिंदु बच्चा है और शिक्षिका उसकी मार्गदर्शिका है। प्रारंभिक बाल शिक्षा केंद्र में आने वाला बच्चा अपने घर की सुरक्षा तथा घर से प्राप्त होनेवाली मान्यताओं को छोड़कर आता है, इसीलिए केंद्र पर उसे लगभग वैसी ही सुरक्षा तथा मान्यताएं मिलना बहुत आवश्यक है तभी वह केंद्र में आसानी से घुल-मिल पाएगा, खुश रहेगा और उसका उचित विकास होगा। इसलिए शिक्षिका का दायित्व है कि वह ।

- सहनशील रहें।
- बच्चों को मां का प्यार दें, तभी बच्चे केंद्र में मां की अनुपस्थिति में भी सुरक्षित महसूस करेंगे।
- संस्कृति के संपोषण तथा संप्रेषण के लिए भाषा, मूल माध्यमों में से एक है। बच्चों तथा अभिभावकों में विश्वास की भावना जागृत करने के लिए उनकी मातृभाषा में बात करना अत्यंत प्रभावकारी है।
- विभिन्न स्थानीय सामग्रियों/वस्तुओं द्वारा अधिगम के लिए वातावरण तैयार करें।
- हमारी भावनाएं, हमारे विश्वास एवं मूल्यों से प्रभावित होती हैं। अपनीभावनाओं को बच्चे पर थोपे नहीं, अपित बच्चे की योग्यता एवं क्षमता में विश्वास करे तथा आगे बढ़ने में उसकी सहायता करें।
- बच्चों को समाधान ढूंढने के अवसर प्रदान करें और उसे अपनी गति से सीखने दें।
- बच्चे को किसी भी ऐसे नाम से न बुलाएं, जिससे बच्चे के प्रति आपके विश्वास में कमी झलकती हो।
- बच्चों के समक्ष बातचीत के आदर्श तरीके प्रस्तुत करे।
- बच्चों का सम्मान करे। इससे उनमें आत्मसम्मान का विकास होता है।
- बच्चा जैसा है, उसे वैसा ही स्वीकारें।
- बच्चे को अपनी क्षमताओं का पता चलने दें, उसके प्रयासों को प्रोत्साहन दें और संप्राप्ति पर उसकी सराहना करें।
- बच्चे की गलतिया ढूंढ़ने के स्थान पर उसकी क्षमताओं, योग्यताओं एवं सामर्थ्य पर ध्यान दें।
- बच्चे के सही कार्य करने पर, चाहे वह छोटा-सा ही क्यों न हो,उसकी प्रशंसा करें।
- बच्चे को सही और गलत का अंतर सिखाएं। शिष्टाचार तथा स्वस्थ आदतों के विकास में बच्चे में सही और गलत का ज्ञान होना आवश्यक है।

यदि बच्चे को प्रारंभिक वर्षों में पर्याप्त भोजन, प्रेम और उत्प्रेरणा मिले, तो उसका प्रभाव उसके भावी जीवन और शिक्षा पर पड़ेगा। साथ ही स्वस्थ एवं उत्पादक जीवन-कला के वांछित उद्देश्यों को प्राप्त करने में उसे अवश्य सहायता मिलेगी।[5,6]

ISSN: 2319 – 8753

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

Vol. 1, Issue 1, November 2012

| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal || Impact Factor: 1.672|

निष्कर्ष

भारतीय सेना के मध्य कमान के अंतर्गत आने वाले आर्मी पब्लिक स्कूलों में अगले सत्र से राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 लागू की जा रही है। मेरठ छावनी स्थित आर्मी पब्लिक स्कूल में शुक्रवार को 31 स्कूलों की वार्षिक प्राचार्य बैठक हुई। इसमें सात स्कूलों के चेयरमैन और सभी स्कूलों के प्राचार्यों ने अगले सत्र से नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू करने पर मंथन किया। आर्मी स्कूल मेरठ में प्राथमिक स्तर पर विद्या प्रवेश कोर्स, फाउंडेशनल लिटरेसी व न्यूमरेसी लागू होगा। इनमें कहानियों, कलाओं, खेलों, दैनिक जीवन व स्थानीय भौगोलिक परिस्थितियों के उदाहरणों से छात्रों को विभिन्न विषयों को के बारे में बताया व सिखाया जाएगा। बच्चों को महत्वपूर्ण व नैतिक निर्णय लेने व उनकी तार्किक क्षमता बढ़ाने के लिए पंचतंत्र, जातक, हितोपदेश, दंतकथाओं और अन्य प्रेरक कहानियों पढ़ाया व सुनाया जाएगा।

यह पढ़ेंगे जूनियर व सीनियर विंग के छात्र
कक्षा छह से आठवीं तक के बच्चों के लिए नए व्यावसायिक विषय व भारतीय हस्तशिल्प की शुरुआत की गई है। कक्षा नौवीं से 12वीं में आर्टीफिशियल इंटेलिजेंस, फाइनेंशियल मार्केट्स मैनेजमेंट और इंफारमेशन टेक्नोलाजी के साथ कंप्यूटर साइंस, वेब एप्लिकेशन, कानूनी अध्ययन, गृह विज्ञान, मनोविज्ञान, पेंटिंग, गायन, संगीत आदि व्यावसायिक और तकनीकी विषय पढ़ाएंगे। कक्षा नौवीं और 10वीं में संस्कृत भाषा भी पढ़ाई जाएगी।

रचनात्मकता और व्यक्तित्व विकास पर हो जोर
बैठक में आर्मी वेलफेयर एजुकेशन सोसायटी के प्रबंध निदेशक मेजर जनरल आरके रैना ने कहा कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली में अंकों की दौड़ या तथ्यों को रटने के स्थान पर बच्चों में रचनात्मकता, तार्किकता व व्यक्तित्व विकास आदि पर बल दिया जाना चाहिए। इस मौके पर पाठ्यचर्या सुधारों, ढांचागत विकास, शैक्षणिक नवाचारों का प्रयोग, प्रशासनिक सुधार, प्रभावी संस्थागत शासन, मूल्यांकन और परीक्षा सुधार और कौशल विकास पर भी चर्चा हुई।

मेजर जनरल अनुपम भागी ने स्वागत भाषण दिया
एपीएस मेरठ के पेट्रन और सब-एरिया कमांडर मेजर जनरल अनुपम भागी ने स्वागत भाषण दिया और प्रशासनिक बोर्ड व मध्य कमान के अध्यक्ष लेफ्टिनेंट जनरल विवेक कश्यप ने समापन भाषण दिया।स्टेशन कमांडर ब्रिगेडियर राजीव कुमार ने धन्यवाद ज्ञापित किया। प्रिंसिपल डा. रीटा गुप्ता ने कहा कि देश की शिक्षा नीति का वास्तविक उद्देश्य छात्रों की रचनात्मकता, सृजनात्मकता, नवाचार और व्यक्तित्व विकास पर अधिक जोर देना है। कार्यक्रम में लेफ्टिनेंट जनरल विवेक कश्यप, मेजर जनरल रमेश कुमार रैना, कर्नल एमए सिद्दीकी उपस्थित रहे।[7]

संदर्भ

1. बुद्ध की कहानियाँ - यहाँ जातक की १०३ कथायें हिन्दी में और अंग्रेज़ी अनुवाद में दी गयी हैं।
2. Jataka - Volumes I and II of E. B. Cowell 1895 3 volume (6 book) edition.
3. Jataka Tales - by Ellen C. Babbitt 1912
4. Jataka Tales - English Animation
5. Jataka Stories - Small selection
6. "The Illustrated Jataka & Other Stories of the Buddha" by Dr C. B. Varma - Illustrated, English
7. ↑ अंगुत्तर निकाय पृष्ठ संख्या-129 (सोलह महाजपदों का नाम) पालि साहित्य का इतिहास भरत सिंह उपाध्याय